अल्लाह सर्वशक्तिमान का सम्मान और उसे गाली देनेवाले का हुक्म

[हिन्दी – Hindi – هندي]

अब्दुल अज़ीज़ बिन मरज़ूक़ अत्तरीफ़ी

अनुवादः अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह

2013 - 1434

IslamHouse.com

تعظيم الله تعالى وحكم شاتمه

« باللغة الهندية »

عبد العزيز بن مرزوق الطريفي

ترجمة : عطاء الرحمن ضياء الله

2013 - 1434

IslamHouse.com

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मैं अति मेहरबान और दयालु अल्लाह के नाम से आरम्भ करता हूँ।

إن الحمد لله نحمده ونستعينه ونستغفره، ونعوذ بالله من شرور أنفسنا، وسيئات أعمالنا، من يهده الله فلا مضل له، ومن يضلل فلا هادي له، وبعد:

हर प्रकार की हम्द व सना (प्रशंसा और गुणगान) केवल अल्लाह के लिए योग्य है, हम उसी की प्रशंसा करते हैं, उसी से मदद मांगते और उसी से क्षमा याचना करते हैं, तथा हम अपने नफ्स की बुराई और अपने बुरे कामों से अल्लाह की पनाह में आते हैं, जिसे अल्लाह तआला हिदायत प्रदान कर दे उसे कोई पथभ्रष्ट (गुमराह) करने वाला नहीं, और जिसे गुमराह कर दे उसे कोई हिदायत देने वाला नहीं। हम्द व सना के बाद :

प्राक्कथन

हर प्रकार की प्रशंसा और गुणगान केवल अल्लाह के लिए योग्य है, ऐसी प्रशंसा व स्तुति जो उसके पद के योग्य हो, तथा मैं उसके आदेश का पालन करते हुए उसका शुक्र करता हूँ। मैं इस बात को स्वीकारता हूँ कि मनुष्य उसकी प्रतिष्ठा व महिमा के योग्य उसका सम्मान करने में असमर्थ हैं, क्योंकि वे उसे पूर्णत: अपने ज्ञान में नहीं ला सकते।

अल्लाह सर्वशक्तिमान की नेमतें असंख्य व अनगणित हैं, और उनके शुक्र (धन्यवाद) का हक़ पूरा नहीं किया जा सकता, उसी के लिए लोक और परलोक है, और उसी की ओर लौटना है, उसके अलावा कोई सत्य पूज्य नहीं, वह अकेला है, उसका कोई साझी नहीं, और उसके सिवाय कोई सच्चा उपासना के योग्य नहीं।

मैं उम्मी (अनपढ़) ईश्दूत मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दुरूद व सलाम भेजता हूँ।

अल्लाह की स्तुति और पैगंबर पर दुरूद व सलाम के बाद :

सबसे महान अक़्ली (विवेक और बुद्धि संबंधी) व नक़ली (धार्मिक) कर्तव्यों में से, सर्वशक्तिमान सृष्टा के पद को पहचानना है जिसकी एकता व एकेश्वरवाद को ब्रह्माण्ड भी स्वीकारता है, और स्वयं प्रति सृष्टि के अंदर उसके सृष्टा व रचियता की महानता, उसकी महान कारीगरी और अनुपमता पर स्पष्ट निशानियाँ (प्रमाण) मौजूद हैं। यदि प्रत्येक व्यक्ति अपने आप को देखे और उसमें मनन चिंतन करे, तो अपने पैदा करनेवाले सर्वशक्तिमान (सृष्टा) के पद व प्रतिष्ठा को पहचान जायेगा, (जैसाकि अल्लाह का कथन है) :

﴿وَفِي أَنْفُسِكُمْ أَفَلَا تُبْصِرُونَ﴾ [الذاريات : ٢١]

"और स्वयं तुम्हारे भीतर (चिंह) हैं, क्या तुम देखते नहीं।" (सूरत ज़ारियात : 21).

तथा नूह अलैहिस्सलाम ने अपनी जाति के लोगों से कहा :

﴿مَا لَكُمْ لَا تَرْجُونَ لِلَّهِ وَقَارًا وَقَدْ خَلَقَكُمْ أَطْوَارًا﴾ [نوح: ١٣-١٤]

"**तुम्हें क्या हो गया है कि तुम अल्लाह की महानता व प्रताप से नहीं डरते हो**, **हालांकि उसने तुम्हें कई अवस्थाओं में पैदा किया है।**" (**सूरत नूह** : 13 -14).

इब्ने अब्बास और मुजाहिद ने फरमाया : "**तुम्हें क्या हो गया है कि तुम अल्लाह की महानता व प्रताप से नहीं डरते हो।**" [1]

तथा इब्ने अब्बास ने यह भी फरमाया : "**तुम्हें क्या हो गया है कि तुम अल्लाह का उस तरह सम्मान नहीं करते हो जैसा कि उसका सम्मान करने का हक़ है।"** [2]

नूह अलैहिस्सलाम ने उन्हें अपने अंदर और अपनी रचना की विभिन्न अवस्थाओं में मनन चिंतन करने की ओर लौटाया है

---

[1] **"अद्दुर्रुल्लुल मंसूर" (८/ २९० - २९१).**

[2] **"जामिउल बयान" लित्तबरी (२३/ २९६), "मआलिमुत-तनज़ील" लिल-बग़वी (५/ १५६).**

ताकि वे अपने ऊपर उसके हक़ को पहचान सकें। अत: अपने नफ्स और उसकी विभिन्न अवस्थाओं में मनन चिंतन करना अल्लाह का सम्मान करने और उसके पद और महिमा को पहचानने के लिए काफी है। तो फिर आसमान व ज़मीन में अल्लाह की अन्य सभी सृष्टियों में ममन चिंतन करने का सुपरिणाम क्या होगा! वास्तव में लोग अल्लाह की महानता व महिमा से इसलिए अनभिज्ञ हैं क्योंकि वे अल्लाह के चिन्हों व निशानियों को बिना समझ बूझ के देखते हैं, उनपर वे जल्दी से आनंद लेते हुए गुज़रते हैं, इब्रत व नसीहत लेते हुए, और मनन चिंतन करते हुए नहीं गुज़रते हैं :

﴿وَكَأَيِّنْ مِنْ آيَةٍ فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ يَمُرُّونَ عَلَيْهَا وَهُمْ عَنْهَا مُعْرِضُونَ﴾ [يوسف : ١٠٥]

“और आकाशों और धरती में बहुत सी निशानियाँ हैं, जिनसे ये मुँह फेरकर गुज़र जाते हैं।” (सूरत यूसुफ : 105).

चुनाँचे विमुखता प्रकट करने वाली बुद्धियों और निश्चेत दिलों को चमत्कार लाभ नहीं पुँचाते हैं और न ही निशानियाँ उनके लिए लाभदायक सिद्ध होती हैं, अल्लाह का सम्मान वही करता है जिसने उसे देखा हो, या उसकी निशानियों को देखा हो और उसके गुणों की उसे जानकारी हो, इसीलिए विमुखता प्रकट करने वाले निश्चेत दिलों में अल्लाह का सम्मान कमज़ोर होता है, चुनाँचे उसकी अवहेलना की जाती है, उसका इनकार किया जाता है, और कभी तो उसे गाली दी जाती है और उसका उपहास किया जाता है !! और महान (अल्लाह) की उसकी महानता से अनभिग होने की मात्रा में अवहेलना की जाती है, और जिस मात्रा में दिलों के अंदर उसके पद व प्रतिष्ठा की कमी होती है उसी मात्रा में उसके साथ कुफ्र किया जाता है और उसके हक़ का इनकार किया जाता है, और एक कमज़ोर की कमज़ोरी से अनभिग होने की मात्रा में उसका आज्ञापालन किया

जाता है, और जिस मात्रा में दिलों के अंदर उसके पद व प्रतिष्ठा की वृद्धि होती है उसी मात्रा में उसकी उपासना की जाती है और उसका आदर व सम्मान किया जाता है।

इसी कारण अनेकेश्वरवादियों ने बुतों (मूर्तियों) की पूजा की, और उस अस्तित्व को नकार दिया जो हड्डियों को जीवित करता है, अल्लाह तआला ने इस खराबी का वर्णन करते हुए फरमाया :

﴿يَا أَيُّهَا النَّاسُ ضُرِبَ مَثَلٌ فَاسْتَمِعُوا لَهُ إِنَّ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ لَنْ يَخْلُقُوا ذُبَابًا وَلَوِ اجْتَمَعُوا لَهُ وَإِنْ يَسْلُبْهُمُ الذُّبَابُ شَيْئًا لَا يَسْتَنْقِذُوهُ مِنْهُ ضَعُفَ الطَّالِبُ وَالْمَطْلُوبُ ﴿٧٣﴾ مَا قَدَرُوا اللَّهَ حَقَّ قَدْرِهِ إِنَّ اللَّهَ لَقَوِيٌّ عَزِيزٌ ﴾

[الحج : ٧٣-٧٤]

"हे लोगो! एक उदाहरण दिया जा रहा है, ज़रा ध्यान से सुनो, अल्लाह के सिवाय तुम जिन - जिन को पुकारते रहे हो वे एक मक्खी भी पैदा नहीं कर सकते, अगरचे वे सब के सब एकजुट हो जायें, बल्कि अगर मक्खी उनसे कोई चीज़ छीन ले तो वे

उसे उससे छुड़ा भी नहीं सकते। बड़ा कमज़ोर है माँगने वाला और बहुत कमज़ोर है जिस से माँगा जा रहा है। उन्हों ने अल्लाह की महानता व बड़ाई के अनुसार उसका आदर व सम्मान नहीं किया, निःसंदेह अल्लाह तआला सर्वशक्तिमान और बड़ा प्रभावशाली है।'' (सूरतुल हज्ज : 73 - 74)

❁ **अल्लाह सर्वशक्तिमान के सम्मान में से : उसके गुणों और नामों की जानकारी, उसकी निशानियों में मननचिंतन, उसकी नेमतों और अनुग्रहों पर विचार करना, बीते हुए समुदायों की स्थितियों, तथा झुठलाने वालों और सत्यापन व पुष्टि करने वालों, विश्वासियों और नास्तिकों के अंजाम के बारे में दृष्टि और अंतर्दृष्टि को काम में लाना।**

❁ **तथा अल्लाह तआला के सम्मान में से : उसके नियमों, उसके आदेशों और निषेद्धों की जानकारी करना, और उनका पालन करके और उनपर अमल करके उनका सम्मान करना है**

; तो यही दिल के अंदर ईमान को जीवित करता है, चुनाँचे ईमान की एक गर्मी और चिंगारी होती है ; उस (ईमान) की गर्मी उस समय ठंड पड़ जाती और उसकी चिंगारी बुझ जाती है जब वह अस्तित्व जिस पर आप ईमान रखते हैं कोई आदेश देता है तो उसके आदेश का पालन नहीं किया जाता, और वह किसी चीज़ से रोकता है तो उसके निषेद्ध से नहीं रूका जाता है। इसीलिए अल्लाह तआला ने हज्ज के संस्कारों और बलि (क़ुर्बानी) के अनुष्ठान के सम्मान के बारे में फरमाया :

﴿ذَلِكَ وَمَنْ يُعَظِّمْ شَعَائِرَ اللَّهِ فَإِنَّهَا مِنْ تَقْوَى الْقُلُوبِ﴾ [الحج : ٣٢]

"(बात) यही है, और जो अल्लाह (की महानता) के प्रतीकों का सम्मान करे तो यह दिलों की परहेज़गारी से है।" (सूरतुल हज्ज : 32).

आदेश और निषेद्ध का सम्मान करना, वास्तव में आदेश देने वाले का सम्मान करना है। इसीलिए अल्लाह के हक़ में नास्तिकता प्रकट नहीं होती है, और उसके साथ कुफ्र नहीं किया

जाता है, उसका इनकार नहीं किया जाता और उसे बुरा भला नहीं कहा जाता है, मगर उससे पहले उसके आदेशों और निषेद्धों को भंग कर दिया गया होता है और उनका अपमान किया गया होता है।

अल्लाह सर्वशक्तिमान और उसकी महानता व महिमा से अनजाने मुँह फेरनेवाले और - इससे पहले- उसके आदेशों और निषेद्धों को निलंबित कर देनेवाले कुछ अवाम के यहाँ, विशेषकर शाम और ईराक़ के देशों और कुछ अफरीक़ी देशों में, अल्लाह को गाली देना, बुरा भला कहना, और कभी कभार उसे ऐसे शब्दों और गुणों से नामित करना मशहूर हो चुका है जिनका चर्चा करना या उन्हें सुनना एक मुसलमान के लिए बहुत दुलर्भ होता है। और कभी तो इसे ऐसे लोग कहते हैं जो अपने आपको मुसलमान समझते हैं, इसलिए कि वे शहादतैन का इक़रार करते हैं (यानी ला इलाहा इल्लल्लाह और

मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह पढ़ते हैं), और कभी तो कुछ नमाज़ियों से भी ऐसा हो जाता है, और शैतान उनकी ज़ुबानों पर इसे जारी कर देता है, और उनमें से कुछ को शैतान यह पट्टी पढ़ाता है कि वे उसके अर्थ को मुराद नहीं लते हैं, और न ही उससे अपने पैदा करनेवाले का अवमान करना चाहते हैं, तथा उन्हें यह समझाता है कि यह बेकार (तुच्छ) बातों में से है जिस पर ध्यान नहीं दिया जाता है! इसी कारण उन्हों ने इसमें लापरवाही से काम लिया है!

इस तरह की चीज़ों को स्पष्ट करने की ज़रूरत है - जबकि शुद्ध बुद्धियों में और सभी आसमानी धर्मों में उसकी खराबी, भ्रष्टता और खतरा स्पष्ट है - ताकि शैतान के छल फरेब और उसकी डोरियों को काट दिया जाए, अल्लाह सर्वशक्तिमान का आदर व सम्मान किया जाए और उसे हर ऐब व बुराई से पवित्र ठहराया

जाए, चाहे वह ज़ुबान पर किसी भी रूप में आया हो, और दिलों के अंदर उसका कुछ भी मक़सद रहा हो।

अत: मैं संक्षेप में कहता हूँ :

नि:संदेह गाली देना - और यह हर वह कथन, या कर्म है जिसका मक़सद अल्लाह सर्वशक्तिमान का अवमान और अपमान हो - कुफ्र (नास्तिकता) है, इस बारे में मुसलमानों का कोई मतभेद नहीं है, चाहे यह गंभीर उपहास के द्वारा हो, या खेल, हँसी और मज़ाक, या गफ़लत और अज्ञानता के तौर पर हो ! इस संबंध में लोगों के उद्देशों और मक़ासिद के बीच कोई अंतर नहीं है, क्योंकि प्रत्यक्ष (ज़ाहिर) चीज़ का ही ऐतिबार किया जाता है।

गाली की वास्तकिता और उसका अर्थ

हर वह चीज़ जिसे लोग अपनी परंपरा में गाली, या मज़ाक़, या अवमान व अपमान का नाम देते हैं, वह शरीअत में भी उसी तरह है, अत: लोगों के रीति रिवाज की तरफ लौटने का ऐतिबार किया जायेगा, जैसे लानत, शाप, अपमान, अश्लील बात (अपशब्द), हाथ के द्वारा अश्लील और बुरा संकेत करना, इसी तरह ऐसे वाक्यांश जिसे किसी विशेष देश (नगर) के लोग इस्तेमाल करते हैं और उसे मज़ाक़ और गाली का नाम देते हैं, तो वह भी गाली ही है ! अगरचे वह दूसरे देशों (नगरों) में गाली न समझा जाता हो।

अल्लाह तआला को गाली देने का हुक्म

इस्लाम के अनुयायियों का इस बारे में कोई मतभेद नहीं कि अल्लाह तआला को गाली देना (बुराई कहना) कुफ्र (अधर्म) है, और अल्लाह सर्वशक्तिमान को गाली देनेवाला क़त्ल कर दिया जायेगा। उन्हों ने केवल उसकी तौबा के स्वीकार किए जाने के संबंध में मतभेद किया है, और क्या -यदि उसने तौबा कर लिया है तो - उसकी तौबा उसे क़त्ल से बचा लेगी या नहीं ? इस बारे में विद्वानों के दो मशहूर कथन हैं।

अल्लाह को गाली देना और मज़ाक़ उड़ाना सबसे बड़ा कष्ट है, अल्लाह तआला का फरामान है :

﴿إِنَّ الَّذِينَ يُؤْذُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ لَعَنَهُمُ اللَّهُ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَأَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا مُهِينًا وَالَّذِينَ يُؤْذُونَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ بِغَيْرِ مَا اكْتَسَبُوا فَقَدِ احْتَمَلُوا بُهْتَانًا وَإِثْمًا مُبِينًا﴾ [الأحزاب : ٥٧ – ٥٨]

“जो लोग अल्लाह और उसके पैगंबर को तकलीफ (कष्ट) पहुँचाते हैं, उनपर दुनिया व आख़िरत में अल्लाह की फटकार (लानत) है, और उसने उनके लिए अपमानित करनेवाला अज़ाब (यातना) तैयार किया है। और जो लोग ईमान वाले पुरूषों और ईमान वाली महिलाओं को कष्ट पहुँचाते हैं बिना किसी (अपराध) के जो उनसे हुआ हो, तो उन्हों ने बुहतान (आरोप) और खुले गुनाह का बोझ उठाया।” (सूरतुल अहज़ाब : 57 - 58)

अल्लाह को कष्ट पहुँचाने का मतलब अल्लाह सर्वशक्तिमान को हानि पहुँचाना नहीं है, क्योंकि कष्ट के दो प्रकार हैं : एक कष्ट वह है जो हानि पहुँचाता है, और एक कष्ट वह है जो हानि नहीं पहुँचाता है, और अल्लाह तआला को कोई चीज़ हानि नहीं पहुँचा सकती है !

चुनाँचे हदीसे कुद्सी में है कि अल्लाह तआला ने फरमाया : "हे मेरे बन्दो! तुम मुझे हानि पहुँचाने तक नहीं पहुँच सकते कि तुम मुझे हानि पहुँचाओ।" [1]

❁ अल्लाह तआला ने उस व्यक्ति पर दुनिया व आखिरत में लानत (धिक्कार) की है जो उसे तकलीफ (कष्ट) पहुँचाता है। और लानत का मतलब है बंदे को रहमत (दया) से दूर कर देना, इस आयत से बंदे को दोनों रहमतों ; दुनिया की रहमत और आखिरत की रहमत से दूर कर दिए जाने का पता चलता है, और दोनों रहमतों से वही व्यक्ति दूर किया जाता है जो अल्लाह के साथ कुफ्र करनेवाला हो ! और यह तथ्य इस बात से उजागर हो जाता है कि अल्लाह तआला ने इसके बाद ईमान वाले पुरूषों और ईमान वाली महिलाओं को कष्ट पहुँचाने वालों का उल्लेख किया है तो उस में इस बात का उल्लेख नहीं किया है कि उस

---

[1] इसे मुस्लिम (हदीस संख्या : 2577) ने रिवायत किया है।

ने दुनिया व आखिरत दोनों में उनपर लानत की है ; क्योंकि लोगों को मात्र उनके दूसरों को गाली, लानत और आरोप के द्वारा कष्ट पहुँचाने से काफिर नहीं ठहराया जा सकता, बल्कि वह बुहतान (झूठा आरोप) और खुला गुनाह है, यदि उसपर कोई प्रमाण न हो।

फिर अल्लाह तआला ने यह उल्लेख किया है उसने उसे कष्ट पहुँचाने वाले के लिए (अपमानित करने वाला अज़ाब) (सूरतुल अहज़ाब : 57) तैयार किया है, और अल्लाह तआला ने अपमानित करने वाले अज़ाब का क़ुर्आन करीम में केवल अल्लाह सर्वशक्तिमान के साथ कुफ्र करने वालों के संबंध में किया है।

❁ अल्लाह तआला को गाली देना, हर कुफ्र से बढ़कर कुफ्र है, वह मूर्तियों की पूजा करनेवालों के कुफ्र से बढ़कर है, क्योंकि मूर्तियों की पूजा करने वालों ने पत्थरों का सम्मान, अल्लाह

तआला का सम्मान करने के कारण किया है ! तो उन्हों ने अल्लाह के पद व महिमा को गिराकर उसे पत्थरों के बराबर नहीं किया है, बल्कि उन्हों ने पत्थरों के पद को ऊँचा कर दिया है यहाँ तक उन्हें अल्लाह के बराबर कर दिया है, इसीलिए अनेकेश्वरवादी (मुशरेकीन) नरक में प्रवेश करने के बाद कहेंगे :

﴿تَاللَّهِ إِنْ كُنَّا لَفِي ضَلَالٍ مُبِينٍ ﴿٩٧﴾ إِذْ نُسَوِّيكُمْ بِرَبِّ الْعَالَمِينَ﴾ [الشعراء : ٩٧ – ٩٨]

"अल्लाह की क़सम ! हम तो खुली गुमराही (गलती) में थे जबकि तुम्हें सर्वसंसार के पालनहार के बराबर ठहराते थे।" (सूरतुश-शुअरा : 97 - 98).

इन लोगों ने पत्थर को ऊँचा कर दिया है ताकि वह अल्लाह के बराबर हो जाए, अल्लाह तआला के पद व महिमा को गिराया नहीं है कि वह पत्थर के बराबर हो जाए ! तो उनका पत्थर का सम्मान करना उनके गुमान में अल्लाह का सम्मान करने से है ! जबकि जिसने अल्लाह को गाली दिया और बुरा कहा है, उसने

अल्लाह तआला को गाली देने के कारण उसे उसके पद से गिरा दिया है ताकि पत्थर से कमतर हो जाए, जबकि मुशरिक लोग (अनेकेश्वरवादी) अपने पूज्यों को हँसी मज़ाक़ में भी गाली नहीं देते हैं ; क्योंकि वे उनका आदर व सम्मान करते हैं ! इसीलिए वे उनकी बुराई करने वालों को बुरा भला कहते हैं!

अल्लाह तआला ने अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर अपना यह फरमान अवतरित किया है :

﴿وَلَا تَسُبُّوا الَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ فَيَسُبُّوا اللَّهَ عَدْوًا بِغَيْرِ عِلْمٍ ﴾ [الأنعام : ١٠٨]

“और जो अल्लाह को छोड़कर दूसरों को पुकारते हैं उन को गाली न दो, नहीं तो वे अनजाने में दुश्मनी के तौर पर अल्लाह को गाली देंगे।” (**सूरतुल अन्आम** : 108).

जबकि मुशरिक लोग काफिर (अधर्म) हैं, लेकिन अल्लाह तआला ने अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को उनकी मूर्तियों को बुरा कहने से मना किया है, ताकि ऐसा न हो कि वे

अपने हठ के कारण अपने कुफ्र से बढ़कर कुफ्र न कर बैठें, और वह मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पूज्य को गाली देना (बुराई करना) है।

❁ अल्लाह तआला को गाली देने और बुरा भला कहने के कुछ शब्द इल्हाद (नास्तिकता) से भी बढ़कर हैं ; क्योंकि मुलहिद (नास्तिक) ने सृष्टा और पालनकर्ता के अस्तित्व को नकारा है, जबकि उसकी हालत यह कहती है कि : यदि मैं उसे साबित करता तो उसका अवश्य सम्मान करता !

परंतु जो व्यक्ति अल्लाह पर ईमान रखने का गुमान करता है ; तो वह अपने पालनहार को साबित मानता है और उसे गाली देता है, और यह स्पष्ट रूप से बड़ा हठ और चुनौती वाला है !!

किसी देश में मूर्तियाँ लगाकर उनके चारों ओर परिक्रमा करना, उन्हें सज्दा करना और उनसे बर्कत लेना अल्लाह के निकट ; उस देश के क्लबों, सड़कों, बाज़ारों और परिषदों (बैठकों) में

अल्लाह को गाली देने के परिचलित होने से कमतर और आसान है ; क्योंकि अल्लाह सर्वशक्तिमान को गाली देने का प्रचलन, अल्लाह सर्वशक्तिमान के साथ मूर्तियों को साझी ठहराने से अधिक गंभीर है, जबकि दोनों ही काम कुफ्र हैं, परंतु मुशरिक अल्लाह को महान समझता है, जबकि गाली देनेवाला अल्लाह को कमतर (तुच्छ) समझता है ! अल्लाह सर्वशक्तिमान इससे बुलंद व सर्वोच्च है।

❁ किसी देश में अल्लाह तआला को गाली देना और उसका चर्चित व प्रचलित होना, उसमें व्यभिचार को हलाल समझने और उसे वैद्ध ठहराने से बढ़कर है, तथा लूत अलैहिस्सलाम की ज़ाति के लोगों की बुराई और उसे वैद्ध ठहरा लेने से भी बढ़कर है, क्योंकि बुराईयों को वैद्ध ठहराने का कुफ्र ऐसा कुफ्र है जिसका कारण अल्लाह के आसमानी विधानों में से एक विधान का इनकार करना और अल्लाह के आदेशों में से एक आदेश का

अवमान व अपमान करना है, लेकिन जहाँ तक गाली देने का संबंध है तो वह ऐसा कुफ्र है जिसका कारण स्वयं विधाता के साथ कुफ्र करना है, और स्वयं विधाता के साथ कुफ्र करने का आवश्यक मतलब उसके सभी विधानों का इनकार करना और उनका अपमान करना होता है, और यह बहुत गंभीर और भयंकर है, जबकि दोनों ही काम कुफ्र हैं ; परंतु कुफ्र के विभिन्न वर्ग हैं, जिस तरह कि ईमान कई दर्जे (पद) हैं।

❁ जब अल्लाह तआला ने ईसाईयों के कुफ्र, और उनके अल्लाह सर्वशक्तिमान की ओर बेटे की निस्बत करके उसके साथ अनुचित व्यवहार करने का उललेख किया, तो उनके अपराध का उल्लेख किया है और उसके प्रभाव का वर्णन, मूर्तिपूजकों और सितारों की पूजा करनेवालों के शिर्क का वर्णन करने से, बढ़कर किया है, अल्लाह तआला ने फरमाया :

﴿وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمَنُ وَلَدًا ﴿٨٨﴾ لَقَدْ جِئْتُمْ شَيْئًا إِدًّا ﴿٨٩﴾ تَكَادُ السَّمَاوَاتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْهُ وَتَنْشَقُّ الْأَرْضُ وَتَخِرُّ الْجِبَالُ هَدًّا ﴿٩٠﴾ أَنْ دَعَوْا لِلرَّحْمَنِ وَلَدًا ﴿٩١﴾ وَمَا يَنْبَغِي لِلرَّحْمَنِ أَنْ يَتَّخِذَ وَلَدًا ﴿٩٢﴾ إِنْ كُلُّ مَنْ فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ إِلَّا آتِي الرَّحْمَنِ عَبْدًا ﴿٩٣﴾ لَقَدْ أَحْصَاهُمْ وَعَدَّهُمْ عَدًّا ﴿٩٤﴾ وَكُلُّهُمْ آتِيهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَرْدًا﴾ [مريم : ٨٨ -٩٥]

"और उनका कहना तो यह है कि (अल्लाह) रहमान ने भी औलाद बना रखी है। नि:संदेह तुम बहुत (बुरी और) भारी चीज़ लाये हो। क़रीब है कि इस कथन के कारण आकाश फट जायें और धरती में दरार हो जाये और पहाड़ कण-कण हो जायें कि वे रहमान की औलाद साबित करने बैठे हैं। और रहमान के यह लायक़ नहीं कि वह औलाद रखे। आकाशों और धरती में जो भी हैं सब अल्लाह के गुलाम बनकर ही आने वाले हैं। उन सब को उस ने घेर रखा है और सब की पूरी तरह गिन्ती भी कर रखी है। ये सारे के सारे क़ियामत के दिन अकेले उसके सामने हाज़िर होने वाले हैं।" (सूरत मरियम : 88 - 95).

क्योंकि संतान की निस्बत करना अल्लाह सर्वशक्तिमान के अंदर कमी निकालना, और उसकी बुराई करना है। यह इस चीज़ से बढ़कर है कि यदि उन्हों ने अल्लाह की इबादत की होती और उसके साथ किसी दूसरो को साझी ठहराया होता, तो वे सृष्टि (मखलूक़) को ऊँचा कर अल्लाह का आदर व सम्मान करने के समान उसकी सम्मान करने वाले होते ; इसलिए कि संतान की निस्बत करना खालिक़ को नीचे गिराना है ताकि वह मख्लूक़ के समान हो जाए, जबकि मूर्ति की पूजा करना मख्लूक को ऊँचा करना है ताकि वह खालिक़ के समान हो जाए, और खालिक़ के पद को गिराना मख्लूक़ के पद को ऊँचा करने से बढ़कर (गंभीर) और सख्त कुफ्र वाला है।

गाली देना और बुराई करना ज़ाहिरी व बातिनी (प्रोक्ष व प्रत्यक्ष) ईमान के विरूद्ध है ; वह दिल के कथन के विरूद्ध है, और वह अल्लाह की पुष्टि करना, उसके अस्तित्व पर और

उसके उपासना का अधिकारी होने पर विश्वास रखना है। इसी तरह वह दिल के कार्य के भी विरूद्ध है, और वह अल्लाह की मोहब्बत और उसका आदर व सम्मान है। अत: किसी का सम्मान करने का दावा स्वीकार नहीं किया जायेगा जबकि आप उसे गाली दे रहे हों ; जैसे कि अल्लाह का सम्मान और माता पिता का आदर। अतः जो व्यक्ति अपने माता पिता का आदर करने का दावा करता है हालाँकि वह उन्हें गाली देता है और उनका मज़ाक उड़ाता है, तो वह अपने दावा में झूठा है !

इसी तरह अल्लाह सर्वशक्तिमान को गाली देना और उसकी बुराई करना ज़ाहिरी (प्रत्यक्ष) ईमान के विरूद्ध व विपरीत है और वह कथनी और करनी दोनों को सम्मिलित है।

अल्लाह को गाली देनेवाले के कुफ्र पर विद्वानों की सर्वसहमति

प्रति मत के विद्वान, जिनका यह कहना है कि ईमान कथनी व करनी का नाम है, इस बात पर एकमत हैं कि अल्लाह को गाली देना कुफ्र है, तथा प्रत्येक गाली या स्पष्ट अवमान (त्रुटिरोपण) में अल्लाह को गाली देनेवाले के उज़्र व बहाने का, उन सबकी सर्वसहमति के साथ, कोई ऐतिबार व मान्य नहीं है।

हर्ब ने अपने "मसाइल" में मुजाहिद के माध्यम से उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है कि उन्हों ने फरमाया : "जो व्यक्ति अल्लाह को गाली दे, या नबियों में से किसी नबी को गाली दे तो उसे क़त्ल कर दो।"[1]

[1] जैसा कि "अस्सारिमुल मसलूल" (पृष्ठ : 102) में है।

तथा लैस ने मुजाहिद के माध्यम से इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत किया है कि उन्हों ने फरमाया : "जिस मुसलमान ने भी अल्लाह को, या किसी नबी को गाली दिया, तो उसने अल्लाह के पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को झुठलाया, और यह धर्म से फिर जाना है, उससे तौबा करवाया जायेगा, यदि वह इस्लाम की तरफ लौट आता है तो ठीक, अन्यथा उसे क़त्ल कर दिया जायेगा ! और जिस मुआहद (प्रतिज्ञा वाले) व्यक्ति ने हठ व दुश्मनी करते हुए अल्लाह को, या किसी नबी को गाली दिया, या उसका खुला प्रदर्शन किया, तो उसने प्रतिज्ञा को भंग कर दिया, अत: उसे क़त्ल कर दो।"[1]

तथा इमाम अहमद से अल्लाह को गाली देनेवाले के बारे में पूछा गया ? तो उन्हों ने फरमाया : "यह मुर्तद (धर्म से फिर

[1] "**अस्सारिमुल मसलूल**" (**पृष्ठ** : 201).

जानेवाला) है, उसकी गर्दन मार दी जायेगी।" जैसाकि उनसे उनके बेटे अब्दुल्लाह ने अपने "मसाइल"[1] में रिवायत किया है। तथा उसके कुफ्र पर और क़त्ल का अधिकारी होने पर, कई एक ने विद्वानों की सर्वसहमति का उल्लेख किया है :

❁ **इब्ने राहवैह रहिमहुल्लाह ने फरमाया : "मुसलमानों की इस बात पर सर्वसहमति है कि जिसने अल्लाह को गाली दिया, या उसके रसलू को गाली दिया, या अल्लाह सर्वशक्तिमान ने जो कुछ अवतरित किया है उसमें से किसी चीज़ को ठुकरा दिया, या अल्लाह के नबियों में से किसी नबी को क़त्ल कर दिया, तो वह इसकी वजह से काफिर है, भले ही वह अल्लाह की अवतरित की हुई चीज़ों को स्वीकारने वाला हो।"[2]**

---

[1] **(पृष्ठः** 431).

[2] "**अत्-तमहीद**" **लिब्ने अब्दिल बर्र** (4/226) **और** "**अल-इस्तिज़कार**" (2/150).

❁ **क़ाज़ी अयाज़ रहिमहुल्लाह ने फरमाया : "इसमें कोई संदेह नहीं कि मुसलमानों में से अल्लाह को गाली देनेवाला व्यक्ति काफिर है उसका खून वैध है।"[1]**

तथा इब्ने हज़्म वगैरा ने भी इज्मा (मुसलमानों की सर्वसहमति) का उल्लेख किया है, तथा इब्ने अबी ज़ैद अल-क़ैरवानी और इब्ने कुदामा इत्यादि जैसे इमामों ने उसके कुफ्र को स्पष्ट रूप से वर्णन किया है।[2]

इस तरह सभी विद्वान अल्लाह को गाली देनेवाले के कुफ्र को स्पष्ट रूप से वर्णन करते हैं, और उससे कोई उज़्र (बहाना) स्वीकार नहीं करते हैं, क्योंकि कम से कम बुद्धि वाला व्यक्ति गाली और उसके अलावा में अंतर करता है, तथा प्रशंसा को

---

[1] **"अश्शिफा" (**2/270).

[2] "**अल-मुहल्ला**" **लिब्ने हज़्म** (11/411), "**अल-मुग़नी**" **लिब्ने कुदामा** (9/33), "**अस्सारिमुल मसलूल**" **लिब्ने तैमियह** (**पृष्ठ** 512), "**अल-फुरूअ**" **लिब्ने मुफलेह** (6/162), "**अल-इनसाफ**" **लिल-मर्दावी** (10/326) "**अत्ताजो वल इकलील**" **लिल-मव्वाक़** (6/288).

निंदा से पहचानता है, लेकिन वे उस पर साहस करने में लापरवाही से काम लेते हैं !

तथा इब्ने अबी ज़ैद अल-क़ैरवानी अल-मालिकी से एक ऐसे आदमी के बारे में पूछा गया जिसने एक आदमी पर लानत किया और उसके साथ अल्लाह पर भी लानत किया, तो उस आदमी ने बहाना करते हुए कहा : मैं शैतान को लानत करना चाहता था तो मेरी ज़ुबान फिसल गई !

तो इब्ने अबी ज़ैद ने उत्तर देते हुए फरमाया : "उसके ज़ाहिरी कुफ्र के कारण उसे क़त्ल कर दिया जायेगा, और उसका उज़्र स्वीकार नहीं किया जायेगा, चाहे वह मज़ाक़ करनेवाला हो या गंभीर मुद्रा में हो।"[1]

इस तरह फिक़्ह के सभी मतों - जैसे चारों मत और ज़ाहिरिया - के विद्वान और क़ाज़ीगण (न्यायाधीश) ज़ाहिर (प्रत्यक्ष) पर

---

[1] **"अश्शिफा" लि-अयाज़** (2/271).

फैसिला करते और फत्वा देते हैं, और बातिन (प्रोक्ष) का एतिबार नहीं करते हैं, अगरचे गाली देने वाला यह गुमान करे कि उसके बातिन (दिल) में जो चीज़ है वह उसके अतिरिक्त है ! और यदि उलमा (विद्वान) ज़ाहिर की खुली मुख़ालफतों को ज़ाहिर के विपरीत बातिन के दावों की तरफ लौटाते, तो शरीयत की संगायें, अहकाम, दंड और सज़ाए समाप्त हो जातीं, और लोगों के अधिकार और मर्यादायें नष्ट हो जातीं, मुसलमान को काफिर से और मोमिन को मुनाफिक़ से अलग करना दुर्लभ हो जाता, और दीन व दुनिया बेवक़ूफों की ज़ुबानों पर, और दिल के रोगियों के हाथों में मज़ाक़ बन कर रह जाते।

अल्लाह को गाली देना कुफ्र है, भले ही कुफ्र का इरादा न हो

अल्लाह तआला को गाली देना कुफ्र है इसमें कोई मतभेद नहीं है, तथा अवाम की इस लापरवाही का कोई मान्य नहीं है कि उनका मक़सद कुफ्र का नहीं था, और गाली पर आधारित उनकी बात अल्लाह के हक़ में बुराई का इरादा किए बिना जारी हो गई है।

यह उज़्र पेश करना उज़्र वाले की अज्ञानता का प्रतीक है ! इस उज़्र को स्वीकार करने की बात जह्म बिन सफवान और कट्टरपंथी मुर्जिया के अलावा कोई नहीं कहता है, जिनका कहना यह है कि : ईमान दिल की जानकारी और पुष्टि का नाम है।

इसका कारण इस बात की जानकारी का न होना है कि ईमान : कथनी और करनी दोनों का नाम है ; अर्थात : ईमान ज़ुबान और दिल के कथन, तथा दिल और अंगों का कार्य को सम्मिलित है।

कट्टरपंथी मुर्जिया का मानना है कि ज़ाहिरी अमल ईमान को साबित नहीं करता है। इस आधार पर वह, दिल के इरादे को देखे बिना, ईमान को नहीं नकारेगा।

जबकि वास्तकिता यह है कि ईमान ज़ाहिर (प्रत्यक्ष) व बातिन (प्रोक्ष) दोनों का नाम है, और उन दोनों में से हर एक दूसरे के साथ मिलकार ईमान को साबित (प्रमाणित) करता है, और उन दोनों में से किसी एक के न पाये जाने से पूरा ईमान ही नहीं पाया जाता है।

जिस तरह कि काफिर यदि कुफ्र का इरादा और क़सद करे तो काफिर हो जाता है ; भले ही उसने अपनी ज़ुबान से उसे न कहा

हो, या अपने अंगों से उसे न किया हो। उसी तरह वह कुफ्र के कहने की वजह से भी काफिर हो जाता है ; भले ही उसने अपने दिल से कुफ्र की नीयत न की हो और अपने अंगों से उसे न किया हो। तथा इसी तरह कुफ्र का करने वाला भी काफिर हो जाता है, भले ही उसने अपने दिल से कुफ्र का इरादा न किया हो, और अपनी ज़ुबान से उसे न कहा हो।

अगर मनुष्य के अंग कोई हराम (निषिद्ध) काम करेंगे, तो उस पर उनकी पकड़ होगी, और दिलों का मामला अल्लाह के हवाले है। और हर वह व्यक्ति जिस पर - उसके ज़ाहिरी कुफ्र के प्रकट होने की वजह से - कुफ्र का हुक्म लगाया जाता है वह बातिन (प्रोक्ष) में अल्लाह के पास (भी) काफिर नहीं होता है ; अतः बातिन (दिल) के मामले अल्लाह सर्वशक्तिमान के हवाले हैं, और ज़ाहिरी चीज़ों पर दुनिया के अंदर बंदे की पकड़ होगी।

अल्लाह तआला ने उस व्यक्ति पर कुफ्र का हुक्म लगाया है जिसने उसका, उसकी किताब (क़ुर्आन) का और उसके पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मज़ाक उड़ाया, और उसके इस उज़्र व बहाने को स्वीकार नहीं किया कि उसने गंभीरता का इरादा नहीं किया था ; जैसाकि अल्लाह तआला का फरमान है :

﴿وَلَئِن سَأَلْتَهُمْ لَيَقُولُنَّ إِنَّمَا كُنَّا نَخُوضُ وَنَلْعَبُ قُلْ أَبِاللَّهِ وَآيَاتِهِ وَرَسُولِهِ كُنتُمْ تَسْتَهْزِؤُونَ ۝٦٥ لاَ تَعْتَذِرُواْ قَدْ كَفَرْتُم بَعْدَ إِيمَانِكُمْ﴾ [التوبة :٦٥-٦٦]

"यदि आप उन से पूछेंगे तो वे साफ कह देंगे कि हम तो यूँ ही आपस में हँस बोल रहे थे। आप कह दीजिए, क्या तुम अल्लाह, उसकी आयतों और उसके रसूल का मज़ाक़ उड़ाते थे ? अब बहाने न बनाओ, नि:सन्देह तुम ईमान के बाद (फिर) काफिर हो गए।" (सूरतुत् तौबा : 65 - 66)

बुद्धि इस बात का तर्क देती है कि लोगों की, उनसे प्रकट होनेवाली चीज़ों पर पकड़ की जायेगी, चुनाँचे किसी पर व्यभिचार के आरोप को स्वीकार नहीं किया जायेगा, इसी तरह

बादशाह अपनी बुराई और धिक्कार व अपमान को स्वीकार नहीं करेगा, चाहे लोग लाख बहाना करें कि उनका ऐसा इरादा नहीं था ! चुनांचे अल्लाह तआला ने बिना सबूत के व्यभिचार का आरोप लगानेवाले पर, आरोप का दण्ड : अस्सी कोड़ा लगाने का आदेश दिया है, और आरोप लगाने वाले का यह बहाना क़बूल नहीं किया जायेगा कि उसका मक़सद हँसी और खेल का था।

इसी तरह बादशाह की हैबत (प्रताप) समाप्त हो जायेगी यदि वह लोगों को अपनी इज़्ज़त के साथ हँसी मज़ाक करने की छूट दे दे ; इसीलिए आप देखते हैं कि वह लोगों को सज़ा देता है और उन्हें दंडित करता है, चाहे उनमें कोई मज़ाक के तौर पर ऐसा करने वाला हो या गंगीभरता के साथ।

तथा इस बारे में शरीयत के व्यापक नुसूस (प्रमाण) पाए जाते हैं कि मनुष्य की, उसके उस अपराध और अत्याचार पर पकड़ की जायेगी जिसकी शरीअत और बुद्धि में स्पष्ट रूप से प्रमाणित

पद व महानता की जानकारी में उसने लापरवाही से काम लिया है, और इस संबंध में उसका बहाना क़बूल नहीं किया जायेगा। सहीह हदीस में अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि उन्हों ने कहा : अल्लाह के पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : "बंदा अल्लाह के क्रोध की कोई ऐसी बात कह देता है जिसे कोई महत्व नहीं देता, परंतु उसके कारण वह सत्तर साल नरक में गिर जाता है।"[1]

यहाँ अल्लाह तआला ने उसके लिए अज़ाब को अनिवार्य कर दिया और उसे माज़ूर (क्षम्य) नहीं समझा, जबकि उसने अपनी बात पर ध्यान नहीं दिया था ! अर्थात अपने शब्द के मूल्य और अपनी बात के माप को सामने नहीं रखा, क्योंकि वह अपनी बात पर विचार करने में लापरवाह था, यदि वह

[1] "सहीह बुखारी" (हदीस संख्या : 6478), और मुस्लिम (हदीस संख्या : 2988) ने इसे संक्षेप में उल्लेख किया है।)

उसमें सोच विचार करता और थोड़ा भी चिंतन करता तो उसके लिए उसके शब्द की मलिनता और उसके बात की बुराई स्पष्ट हो जाती।

तथा बिलाल बिन हारिस रज़ियल्लाहु अन्हु की हदीस में आया है, वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत करते हैं कि आप ने फरमाया :

"तुम में से कोई आदमी अल्लाह के क्रोध की एक बात कहता है, जिसके उस स्तर तक पहुँचने का उसे गुमान नहीं होता जहाँ वह पहुँच गई है, तो इसकी वजह से अल्लाह तआला उसके ऊपर अपने क्रोध को उस दिन तक के लिए लिख देता है जिस दिन वह उससे मुलाक़ात करेगा।"[1]

अतः इंसान का यह बहाना करना कि अल्लाह को गाली देना और उस पर लानत करना, बिना निन्दा व निरादर या अपमान

---

[1] **"मुसनद अहमद"** (3/469) **हदीस संख्या** (15852), **"सहीह इब्ने हिब्बान"** (280).

का इरादा किए हुए उसकी ज़ुबान पर आ जाता है : ऐसा उज़्र व बहाना है जिसे इबलीस इंसान को समझाता है ; ताकि उसे उसके कुफ्र पर बनाये रखे और उसे अपने पालनहार के हक़ में अपने ऊपर अत्याचार और अवहेलना पर जमाये रखे। चुनाँचे शैतान इंसान को कुफ्र पर नहीं उकसाता है मगर उसके लिए कमज़ोर अक़ली और शरई संदेह पैदा करके उसे उस पर आश्वस्त कर देता है, हालाँकि वे सही समझ के मानक पर नहीं टिक पाते।

इंसान पर इबलीस के संदेहों, छल कपट, और चालों में से : यह भी है कि वह इंसान की नेकियों को सामने करके उसकी दृष्टि में कुफ्र और पाप को तुच्छ और हल्का बना देता है, जिसकी वजह से पापी इंसान के दिल में अवज्ञा की तकलीफ और पाप का पश्चाताप (अफसोस) समाप्त हो जाता है; जैसे कि अवाम में से अल्लाह को गाली देनेवाले को यह समझाना कि वह शहादतैन

(ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह) का इक़रार करता है, और माता पिता के साथ अच्छा व्यवहार करता है ! और हो सकता है कि उसने नमाज़ भी पढ़ी हो!

इसी तरह के संदेहों और छल के द्वारा मक्का में अरब अनेकेश्वरवादी भी पथभ्रष्ट हुए, उन्हों ने अल्लाह के साथ साझी ठहराया, और उसे छोड़कर मूर्तियों की पूजा की, और अपने दिलों में हाजियों को पानी पिलाने, मस्जिदे हराम को आबाद करने, और काबा को कपड़ा पहनाने की बातें रखीं, लेकिन यह सब अल्लाह के पास उन्हें कोई लाभ नहीं पहुँचाया, क्योंकि उनका अल्लाह के साथ उसके अलावा को साझी ठहराना उसका सम्मान करने के विरूद्ध है, तो वे बैतुल हराम का सम्मान करते हैं जबकि बैतुल हराम के मालिक (पालनहार) के साथ कुफ्र करते हैं ! हालांकि बैतुल हराम का सम्मान उसके मालिक

(पालनहार) की वजह से की जाती है, पालनहार का सम्मान उसके घर की वजह से नहीं किया जाता है।

अल्लाह तआला ने फरमाया :

﴿أَجَعَلْتُمْ سِقَايَةَ الْحَاجِّ وَعِمَارَةَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ كَمَنْ آمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَجَاهَدَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ لَا يَسْتَوُونَ عِنْدَ اللَّهِ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ﴾ [التوبة : ١٩]

"क्या तुम ने हाजियों को पानी पिला देना, और मस्जिदे हराम की सेवा करना उस के बराबर कर दिया है जो अल्लाह पर और क़ियामत के दिन पर ईमान लाये, और अल्लाह के रास्ते में जिहाद किया, ये अल्लाह के निकट बराबर नहीं, और अल्लाह तआला ज़ालिमों (अत्याचारियों) को रास्ता नहीं दिखाता है।" (सूरतुत्तौबा : 19)

और अधिकतर इंसान का अल्लाह पर ईमान एक दावा होता है, क्योंकि वह उसके अलावा के विपरीत होता है, अल्लाह तआला ने फरमाया :

﴿وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَقُولُ آمَنَّا بِاللَّهِ وَبِالْيَوْمِ الْآخِرِ وَمَا هُمْ بِمُؤْمِنِينَ﴾ [البقرة : ٨]

और लोगों में से कुछ कहते हैं कि हम अल्लाह पर और आखिरत के दिन पर ईमान लाये हैं, हालांकि वास्तव में वे ईमान वाले नहीं हैं।'' (**सूरतुल बक़रा** : 8).

अत: अल्लाह का सम्मान करने और शहादतैन का इक़रार करने का दावा, अल्लाह सर्वशक्तिमान को बुरा भला कहने और उसका मज़ाक उड़ाने के साथ शुद्ध नहीं हो सकता।

अल्लाह को गाली देनेवाले की सज़ा

विद्वानों का इस बात पर इत्तिफाक़ (सर्वसहमति) है कि अल्लाह को गाली देनेवाले को कुफ्र करने की वजह से क़त्ल कर दिया जायेगा, और वह क़त्ल किए जाने के बाद मुसलमानों के प्रावधानों : उस पर जनाज़ा की नमाज़, स्नान, कफन, दफन और दुआ का अधिकारी नहीं होगा। चुनाँचे उनका विचार है कि उस पर (जनाज़ा की) नमाज़ पढ़ी जायेगी न उसे स्नान कराया जायेगा, न उसे कफन पहनाया जायेगा और न ही उसे मुसलमानों के क़ब्रिस्तान में दफन किया जायेगा, तथा उसके लिए दुआ करना भी जायज़ नहीं है ; क्योंकि वह मुसलमानों में से नहीं है !

विद्वानों ने केवल उसकी तौबा के क़बूल किए जाने के बारे में मतभेद किया है, यदि उसने अल्लाह तआला के बारे में अपने

घृणास्पद काम या कथन से तौबा कर लिया है, और क्या क़त्ल से पहले उससे तौबा करवाया जायेगा, या उसे क़त्ल कर दिया जायेगा और दुनिया में उसकी तौबा को नहीं सुना जायेगा, और अल्लाह तआला आखिरत में उसके बातिन का ज़िम्मेदार होगा ? इस संबंध में उन्हों ने विद्वानों के दो मश्हूर कथनों पर मतभेद किया है :

प्रथम कथन : उसकी तौबी नहीं स्वीकार की जायेगी, बल्कि बिना तौबा कराये ही उसे क़त्ल करना अनिवार्य है, और उसका तौबा आखिरत में अल्लाह के हवाले है, हनाबिला और उनके अलावा फुक़हा के एक समूह के यहाँ यही मश्हूर कथन है। यही उमर बिन खत्ताब और इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा और उनके अलावा का प्रत्यक्ष कथन है जैसाकि पीछे गुज़र चुका, और यही अहमद बिन हंबल के मश्हूर कथन का प्रत्यक्ष है।

इसका कारण : यह है कि तौबा ज़ाहिरी अपराध (जुर्म) को समाप्त नहीं करती है, और न ही लोगों के यहाँ, अल्लाह को गाली देने और उसका मज़ाक उड़ाने की लापरवाही से जन्म लेने वाली खराबी को दूर कर सकती है; अत: तौबा क़बूल कर लेने से लोग इस घोर पाप में लापरवाही से काम लेंगे, और जब सत्ता और अदालत पर पेश किये जायेंगे तो तौबा का प्रदर्शन करेंगे, फिर छोड़ दिए जायेंगे। ऐसा करना लोगों के अंदर कुफ्र पर दु:साहस पैदा करेगा और उनके दिलों में उसके मामले को आसान और तुच्छ बना देगा, जबकि दण्ड संहिता अपराधी को सीख देने और उसे पवित्र करने, तथा उसके कथन और कर्म के समान करने और कहने वाले दूसरे व्यक्ति को उससे रोकने और दूर रखने के लिए निर्धारित किया गया है, और तौबा स्वीकार कर लेना दण्ड के दोनों उद्देशों को समाप्त कर देता है !

दूसरा कथन : उससे तौबा करवाया जायेगा और उसकी तौबा को स्वीकार किया जायेगा, अगर उसकी ओर से सच्चाई और अपने अपराध की तरफ पुन: न लौटने का संकल्प प्रकट हो, यही जमहूर विद्वानों का कथन है।

उनके तौबा को क़बूल करने का कारण : यह है कि गाली देना कुफ्र है, और काफिर का हर कुफ्र से तौबा करना स्वीकृत है, जैसे कि अनेकेश्वरवादी, मूर्तिपूजक और नास्तिक लोग इस्लाम में प्रवेश करते हैं, और उनका इस्लाम में प्रवेश करना उनके पिछले कुफ्र को मिटा देता है, और अल्लाह तआला तौबा करने वाले की तौबा को क़बूल करता है और उसे माफ कर देता है। और गाली के द्वारा अल्लाह पर अत्याचार करना अल्लाह सर्वशक्तिमान का हक़ है और अल्लाह तआला ने उसे गाली देकर अपने आप पर अत्याचार करने वाले को क्षमा कर दिया है और हर शिर्क करनेवाले के तौबा को क़बूल किया है।

जबकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को गाली देने का मामला इसके विपरीत है, वह ऐसा हक़ जिसे लेना अनिवार्य है, क्योंकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी मृत्यु के कारण प्रत्येक गाली देनेवाले को क्षमा नही प्रदान किया है।

और इस संबंध में मूल सिद्धांत : आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के महान हक़ को लेना है, और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को गाली देना कुफ्र है, और ऐसा करने वाले के हक़ में क़त्ल करना अनिवार्य है।

फिर यह बात भी है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को गाली देना, लोगों के अंदर आपके पद वह प्रतिष्ठा को प्रभावित करत है, और दिलों के अन्दर आपके स्थान को कमज़ोर कर देता है, जबकि अल्लाह को गाली देने और बुरा भला कहने का मामला इसके विपरीत है ! क्योंकि अल्लाह को गाली देने वाला स्वयं अपने आपको नुक़सान पहुँचाता है।

❁ सत्य तो यह है कि : जिसने अल्लाह सर्वशक्तिमान को गाली दिया, उसे क़त्ल करना अनिवार्य है और उससे तौबा नहीं करवाया जायेगा, और उसकी तौबा अल्लाह के हवाले है जिससे वह अपने बातिन के साथ मुलाक़ात करेगा, और अल्लाह तआला अपने न्याय, या अपनी क्षमा के द्वारा उसके साथ व्यवहार करेगा।

और जिस व्यक्ति ने अल्लाह को गाली दी और तौबा कर लिया, और उसे तलब करने और उस पर सक्षम होने से पहले अपनी तौबा को ज़ाहिर कर दिया; तो उसकी सच्चाई प्रकट होने की वजह से उसकी तौबा क़बूल की जायेगी। तो उसका हुक्म उन काफिरों के समान है जो स्वेच्छा इस्लाम में प्रवेश करते हैं, भले ही वे अपने इस्लाम सवीकारने से पहले अल्लाह को बुरा भला कहने पर सहमत थे।

अल्लाह तआला को बुरा भला कहने (गाली देने) के दो प्रकार हैं:

प्रथम : प्रत्यक्ष और स्पष्ट गाली

जैसे कि अल्लाह सर्वशक्तिमान की अस्तित्व को लानत करना, उसकी निंदा करना, उसका मज़ाक उड़ाना, उसके अंदर ऐब और कमी निकालना, तो ऐसे व्यक्ति पर पिछले सभी प्रावधान (अहकाम) लागू होंगे, और जब उलमा अल्लाह सर्वशक्तिमान को गाली देने के अहकाम का उल्लेख करते हैं तो यही मुराद होता है।

दूसरा : अप्रत्यक्ष गाली

जैसे कि अल्लाह तआला की उन निशानियों और सृष्टियों को गाली देना जिनमें वह तसर्रूफ करता है, जिनका मनुष्य के चयन अधिकार और कमाई के समान, कोई चयन अधिकार और कमाई नहीं होती है, जैसे कि ज़माना (युग), दिनों, घंटों, क्षणों, महीनों, सालों, ग्रहों और उनके संचालन को गाली देना,

तो इस पर गाली देने वाले के कुफ्र, उसे क़त्ल करने के हुक्म आदि के बारे में पिछले प्रावधान लागू नहीं होंगे, सिवाय इसके कि यह स्पष्ट हो जाए कि उसने उन्हें चलाने और जारी करने वाले का क़सद किया है, और स्पष्ट रूप से अल्लाह सर्वशक्ति को मुराद लिया है।

सहीहैन (सहीह बुखारी व सहीह मुस्लिम) में अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत से साबित है कि अल्लाह के पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : "अल्लाह ने फरमाया : आदम का बेटा मुझे तकलीफ पहुँचाता है, वह ज़माने को गाली देता है, और मैं ही ज़माना हूँ, मेरे ही हाथ में सब अधिकार है, मैं रात और दिन को पलटता और फेरता हूँ।"[1]

तथा एक रिवायत के शब्द यह हैं कि : "इब्ने आदम मुझे कष्ट देता है, वह कहता है : आह ज़माने की विफलता! ; तो तुम में

[1] **इसे बुखारी** (**हदीस संख्या** : 4826, 7491) **और मुस्लिम** (2246) **ने उल्लेख किया है।**

से कोई "आह ज़माने की विफलता" न कहे, क्योंकि मैं ही ज़माना हूँ, उसके दिन और रात को उलटता फेरता हूँ, फिर जब चाहूँगा उन्हें समेट लूँगा।"[1]

तथा ग्रहें जैसे सूर्य और चंद्रमा, और उनके प्रभाव जैसे रात व दिन और ज़माने, संचालित हैं उन्हें चयन का अधिकार नहीं है, वह अकेले अल्लाह की इच्छा से बाहर नहीं निकलते हैं, और न ही उनकी अपनी इच्छा, कमाई और अधिकार है, उन्हें ब्रहमांड से संबंधित आदेश के द्वारा ही आज्ञा दी जाती है, उनके लिए उससे बाहर निकलने अधिकार नहीं है।

अत: उनको गाली देना और बुरा भला कहना, उनके संचालक और उन्हें आदेश देने वाले अल्लाह सर्वशक्तिमान पर हमला करना और उनके अंदर उसकी बुद्धिमत्ता और इच्छा पर आपत्ति व्यक्त करना है।

---

[1] **"सहीह मुस्लिम"** (हदीस संख्या : 2246).

इसी कारण अल्लाह तआला ने ज़माने को गाली देने को आवश्यक रूप से स्वयं उसे सर्वशकितमान को गाली देना क़रार दिया है!

तथा अल्लाह तआला ने इंसान को गाली देने को अल्लाह सर्वशक्तिमान को गाली देने के समान नहीं बनाया है, क्योंकि इंसान को अधिकार और इच्छा प्राप्त है जो अल्लाह तआला ने उसके लिए प्रदान किया है, अल्लाह तआला ने फरमाया :

﴿وَمَا تَشَاءُونَ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ﴾ [التكوير : ٢٩]

“**और तुम सर्वसंसार के पालनहार अल्लाह के चाहे बिना कुछ नहीं चाह सकते।**” (**सूरतुत् तकवीर** : 29).

जहाँ तक ग्रहों जैसे सूर्य और चंद्रमा की बात है, तो अल्लाह तआला ने उनके बारे में फरमाया है:

﴿لَا الشَّمْسُ يَنْبَغِي لَهَا أَنْ تُدْرِكَ الْقَمَرَ وَلَا اللَّيْلُ سَابِقُ النَّهَارِ وَكُلٌّ فِي فَلَكٍ يَسْبَحُونَ ﴾ [يس : ٤٠]

"न सूर्य के वश में है कि चंद्रमा को पकड़े और न रात, दिन से आगे बढ़ जाने वाली है, और सब के सब आकाश में तैरते फिरते हैं।" (सूरत यासीन : 40)

अल्लाह और उसके गुणों का सम्मान करना अनिवार्य है !

❁ **अल्लाह तआला के सम्मान के अंतर्गत : उसके प्रबंधन, उसके आदशे व निषेध का सम्मान करना, उनके पास रूकना और उनका अनुपालन करना, तथा जिस चीज़ का ज्ञान इंसान को नहीं है उसके अंदर न पड़ना है।**

❁ **तथा अललाह तआला के सम्मान में से ही : उसको याद करना, उसको पुकारना, उससे मांगना, और ब्रह्माण्ड की घटनाओं को केवल उसी अकेले के साथ जोड़ना है ; क्योंकि वही उनका निर्माता व रचयिता और उनका प्रबंधन करने वाला है उसका कोई साझी नहीं ; अल्लाह तआला ने फरमाया :**

﴿وَمَا قَدَرُوا اللَّهَ حَقَّ قَدْرِهِ وَالْأَرْضُ جَمِيعًا قَبْضَتُهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَالسَّمَاوَاتُ مَطْوِيَّاتٌ بِيَمِينِهِ سُبْحَانَهُ وَتَعَالَى عَمَّا يُشْرِكُونَ﴾ [الزمر : ٦٧]

“और उन लोगों ने जैसा सम्मान अल्लाह का करना चाहिए था नहीं किया, क़ियामत के दिन सारी धरती उसकी मुट्ठी में होगी और आकाश उसके दाहिने हाथ में लपेटे हुए होंगे। वह पवित्र और सर्वोच्च है हर उस चीज़ से जिसे लोग उसका साझी ठहराते हैं।” (सूरतुज़ ज़ुमर : 67)

इसी पर संक्षेप के साथ इस पत्रिका का समापन होता है।

और अकेला अल्लाह ही सहायक और शुद्ध मार्ग दिखानेवाला है, उसका कोई साझी नहीं, हम उससे अच्छे इरादे और सर्व व्यापी लाभ का प्रश्न करते हैं।

अल्लाह तआला हमारे ईश्दूत मुहम्मद, उनकी संतान, उनके साथियों और भलाई के साथ परलोक के दिन तक उनका अनुसरण करने वालों पर दया व शांति अवतरित करे।

लेखक

अब्दुल अज़ीज़ बिन मरज़ूक़ अत्तरीफ़ी

21, **मुहर्रम** 1434 **हिज्री**